Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852; Impact Factor: RJIF 5.44
Received: 15-10-2020; Accepted: 01-11-2020; Published: 16-11-2020
Volume 1; Issue 2; 2020; Page No. 45-47

निषाद और दामिल भारत के मूल निवासी

डॉ संजय कुमार
चनमाना, डाकघर, शिवराम, बहेरी, जिला, दरभंगा, बिहार, भारत

प्रस्तावना

वर्तमान समय में निषाद जातियां भी अन्य जातियों की तरह रक्त समिश्रण के कारण इतने बदल गए है कि उसे ठीक - ठीक समझ पाना कठिन है परन्तु यही खासयत भारत को अनेकता में एकता का संदेश भी देती है | परन्तु इस आलेख के माध्यम से मै आपको निषाद और दामिल के प्राचीन जन और उनके संघर्षों की कहानी बतांगे |

अब प्रश्न उठता है कि निषाद कौन है ? क्या यह निषाद (मल्लाह) ही प्राचीन निषाद का वंशज है ? दरअसल "लोगों के रंग-रूप, वेश- भूषा ,रहन- सहन , भाव-विचार और जीवन विषयक दृष्टिकोण में जो अद्भूत एकता आ गयी है, उसे देखते हुए एक नस्ल के लोगों को दूसरी नस्ल के लोगों से अलग करने का काम अस्वाभाविक और थोडा मुश्किल भी मालूम होता है | लेकिन तब भी कुछ ऐसी कसौटियाँ मौजूद है जिनका आधार पर विलगाव किया जा सकता है | दुनियां में जितनी भी जातियां बसती है, उनकी मूल नस्लों की पहचान भाषा और शरीर के अन्य गठन को देखकर की जाति है |" [1] आज निषाद की जितनी भी प्रजातियाँ है सभी के डील- डौल में कुछ समानताएँ पायी जाती है इनका रंग काला होता है, नाक चिपटा होता है और यह कठिन मेहनत करते है | अधिक गहराई में जाने पर पता चलता है कि निषाद पूर्व में अग्नेय थे जो भारत में आर्यों के आगमन से पूर्व से ही भारत में निवास करते थे विशेष कर सिन्धु घाटी के आसपास आर्य का भारत में आगमन सिन्धु सभ्यता के पश्चात हुआ है इस बात को सभी इतिहासकार एकमत से स्वीकार करता है| "गाँव के पास रहने वाली अनेक निम्न जातियों के लोगों का जो अत्यंत विशाल समुदाय है (जैसे डॉम, कटार , भुइया आदि) वह अग्नेय भंडार से आया है | रक्त समिश्रण के कारण इनके रंग-रूप और ढाँचे बिल्कुल बदल गए है और उनमे से प्रायः सबने अपने मालिको की भाषा सीख ली है अथवा कंजरों के समान कुछ घुमक्कर जातियाँ है जिनकी भाषाओँ में अनेक भाषाओँ का मिश्रित रूप है |" [2] डॉ नीलकंठ शास्त्री ने अपने ग्रन्थ 'ए हिस्ट्री ऑफ़ साउथ इंडिया' में लिखा है कि मोहन जोदारो में जिस नर्तकी की मूर्ति मिली है वह अग्नेय जाति की है हो सकता है द्रविड़ों का उद्भव स्रोत यही हो | वस्तुतः "अग्नेय लोग सिन्धु की तराई में भी वियमान थे आर्यों ने उन्ही का नाम निषाद रखा तथा उनकी रंग और चिपटी नाक की हँसी उड़ाई | निषाद वंश के लोगों का अन्य नाम कोल और भील भी मिलते है ईसा से लगभग 1500 ईस्वी पूर्व ही उत्तर भारत के बहुत से आग्नेय लोग आर्य हो गये, यदयपि बौद्ध काल में भी चांडालों की बस्ती और उनकी स्वतंत्र भाषा के जीवित होने के प्रमाण मिलते है | इन चार हजार वर्ष के मिश्रण और समन्वय के बाद भी हमारे देश में जो भी वनवासी जातियाँ है संभावना यही है कि वे अग्नेय खानदान की है और उनकी भाषाओँ का भी कुछ- न- कुछ संबंध अग्नेय भाषा समूह से

है|" [3] संभवतः आर्यों के आक्रमण से ही सिन्धु घाटी की सभ्यता विघटित हुई होगी, परन्तु आग्नेय जातियों वहाँ से विस्थापित होकर अन्य - अन्य जगहों पर गया होगा |

किरात और निषाद के संघर्ष में निषाद के विजित होने का मूल वजह ताम्बे का आविष्कार एवं निषाद के पूर्वज अग्नेय का " ताम्बे के संपर्क में पहले आना रहा होगा, निषाद ताम्बे के संपर्क में पहले आए इसीलिए वह किरातों को उत्तर में धकेलने में सफल हुए " [4]

निषाद के पूर्वज अग्नेय भी सिन्धु नदी घाटी मे निवास करते थे अतः मछली पकरने में उस्ताद रहे होंगे | उनके वंसज आज भी इस कला को बचाए रखे है | भारत वर्ष में सदाबहार नदियों की भरमार है अग्नेय वंशज निषाद नदियों के किनारे वास किया एवं आज तक मछलियाँ पकड़ने की कला को नहीं है परन्तु यंहा पर यह जान लेना अनिवार्य है कि निषाद में केवल मल्लाह ही नहीं है बल्कि डोम,मुसहर ,मांझी ,बातर ,भुइया भी है यद्यपि आज आर्यों एवं अनार्यों की मान्यताओं में बहुत कुछ समानताएँ है | दोनों की देवी, देवता सम्बंधित मान्यता एक जैसी है यह भारतीय सामासिकता का परिणाम है |

निषादों के पश्चात भारतीय भूमि पर दमिलों का आगमन हुआ जिसे आज हम द्रविड़ के रूप में जानते है यह निसंदेह भारत भूमि पर आर्यों से बहुत पहले आए होंगे क्योंकि इस बात से संसार के सभी इतिहासकार सहमत है की आर्यों के आगमन से पूर्व ही सिन्धु घाटी और हड़प्पा की सभ्यता अपने चरम पर थी संभवतः आर्यों ने अपने युग के प्रचलन के अनुसार इस संस्कृति को नष्ट कर दिया | महापंडित राहुल सांकृत्यायन का मत है की दामिल जब किरात के क्षेत्रों में आया तब युगानुरूप जन-संघर्ष हुआ होगा परन्तु एक दूसरे के स्वाभाव से अवगत होकर साथ-साथ रहना सीख लिया होगा | " पहले दोनों के संघर्ष हुए , पर निषादों को यह मालूम होते देर न लगी कि इनसे संघर्ष में हम सफल नहीं हो सकते है ,वह केवल जीविका छिनने के लिए नहीं आते थे बल्कि अपनी और परायी चीजों को परिवर्तन करके सहायक भी बनाना चाहते है | यह दामिल जाति के थे जिसके बहुत से अवशेष उत्तर भारत में मिलते है | बाद में आने वाले आर्य यद्यपि उनके स्मृति चिन्ह को मिटा देना चाहते थे पर यह उनके बस की बात नहीं थी | दामिल रंग में ना किरातों की तरह पंडू वर्ण के थे और न निषादों के तरह बिल्कुल काले | इनका रंग सावला या पक्का था |" [5] इस प्रकार दो जातियाँ साथ- साथ रहने लगे एक- दूसरे के ज्ञान- विज्ञान का आदान-प्रदान होने लगा | साथ- साथ रहने वालों के रक्त-समिश्रण को कौन रोक सकता है ? एक ढेला था पड़ा मैदान में ,एक पत्ता भी आकर गिरा वहाँ |

साथ रहने से मोहब्बत हो गयी , चाहता था वह अलग होना नहीं |

पर तो संसार के सबसे बुद्धिमान प्राणी थे, " सभ्यता और संस्कृति में बढ़ी हुई जाती अपने से पिछड़ी जाति को हीन दृष्टि से देखते है | पर निषादों और दमिलों का भेद-भाव अधिक सताब्दी तक नहीं चला आज उनका फर्क करना भी मुश्किल है|"[6] "निषाद को उन्होंने अपने अधीन बनाया और निषाद दास - दासियों को भी अपने घरों में स्थान दिया था| इसका अनिवार्य परिणाम रक्त समिश्रण हुआ| दमिलों में ऐसे काफी स्त्री-पुरुष मिलने लगे जो शारीर से निषादों से बहुत अंतर नहीं रखते थे |" [7] इस रक्त- समिश्रण से सबसे ज्यादा निषादों को ही फायदा हुआ| दामिल की सभ्यता निषादों से बहुत ज्यादा विकसित हो चुकी थी उन्हें बहुत बहुत सारी धातुओं की जानकारी भी हो चुकी थी आर्यों के तरह दामिल बर्बर नहीं थे अब तक दामिल व्यापर-वाणिज्य की ओर उन्मुख हो चुके थे अपने ज्ञान-विज्ञान से प्राप्त वस्तुओं का निर्यात अन्य लोगों के बीच करना चाहता था परन्तु समुन्द्र तक पहुँच नहीं बन पाया था परन्तु नदियों में प्रवाहित करने लयत डोंगियाँ

बन चुकी थी महापंडित राहुल सांकृत्यायन का अनुमान है, सिसवा में "निषाद सरदारों से उनकी घनिष्टता स्थापित हुई, उनके साथ निषाद दामिल मिश्रित संताने सिसवा में बढ़ने लगी | इस प्रकार सिसवा एक मिश्रित जाति और संस्कृति का केंद्र बना | दमिलों के ज्ञान और अनुभव से लाभ उठाने का उन्हें मौका मिला और कुछ ही शताब्दियों में इस भू- भाग का कायापलट हो गया|" [8]

इसमें विद्वानों में असहमति हो सकती है कि निषाद जातियाँ उत्तर भारत में तो है, परन्तु द्रविड़ जातियाँ सुदूर दक्षिण में क्यों है ? बात स्पष्ट है प्रमाणिक रूप से उस समय के संबंध कुछ भी नहीं कहा जा सकता क्योंकि उस समय के लिखित ग्रन्थ हमारे समझ नहीं हैं| सिंधु और हड़प्पा से लिपियों को हम पढ़ नहीं सकते तब तो अन्यान्य आधार ही लेना पड़ेगा |जिसमें भाषा सबसे महत्वपूर्ण वाहक हो सकता है| आर्य से पूर्व भारत में तीन जातियाँ थी| किरात, निषाद और दामिल| चलिए हम भाषा को आधार मानकर इसका विश्लेषण करते हैं|" मंगोल जाति के लोगों की भाषा तिब्बती चीनी परिवार की भाषा हैं, यद्यपि उसपर आर्य-भाषओं का भी बहुत प्रभाव हैं| द्रविड़ परिवार की भाषाएँ तमिल, मलयालम, कन्नड़ई और तेलेगु हैं| इन भाषओं के अनेक शब्द और प्रयोग आर्य भाषओं में आ गए हैं और संस्कृत के बहुत से शब्द द्रविड़ भाषाओँ में मिल गए हैं| लेकिन तब भी दक्षिण भारत की ये चार भाषाएँ दक्षिण में ही प्रचलित है | दक्षिण भारत से दो एक जगहों पर इसके निशान मिलते है जो इस बात की यादगार है कि कदाचित द्रविड़ लोग कभी भारत भार में फैले हुए थे | उदाहरनार्थ बलूचिस्तान की ब्राहुई भाषा द्रविड़ भाषा है और बिहार (झारखण्ड) के आदिवासियों की ओरांव जाति जो भाषा बोलती है वह भी द्रविड़ से मिलती जुलती है|" [9]

अतः यद्यपि कोई ठोस ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है परन्तु भाषा ,रहन- सहन, दिनचर्या एवम सामान्य लोगों द्वारा निर्वाहित परम्परा के आधार पर कहा जा सकता है कि भारत के वर्तमान जातियाँ अनेक वर्ण- संघर्षो को झेलकर अपने वजूद को बचाए रखा है |

संदर्भ विवरण

1. संस्कृति की चार अध्याय – रामधारी सिंह 'दिनकर'- पृष्ठ – 45
2. संस्कृति की चार अध्याय – रामधारी सिंह 'दिनकर'- पृष्ठ – 10
3. संस्कृति की चार अध्याय – रामधारी सिंह 'दिनकर'- पृष्ठ – 11
4. कनैला की कथा – राहुल सांकृत्यायन पृष्ठ – 7
5. कनैला की कथा – राहुल सांकृत्यायन पृष्ठ – 8
6. कनैला की कथा – राहुल सांकृत्यायन पृष्ठ – 8
7. कनैला की कथा – राहुल सांकृत्यायन पृष्ठ – 9
8. कनैला की कथा – राहुल सांकृत्यायन पृष्ठ – 9
9. संस्कृति की चार अध्याय – रामधारी सिंह 'दिनकर'- पृष्ठ – 7